(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री प्रणीत 'काकली' में शिल्प–सौंदर्य

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

CRAFT-BEAUTY IN ACHARYA JANAKI VALLABH SHASTRI'S 'KAKLI'

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

---

*अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों द्वारा भाषा को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हुए सुन्दर शब्दों का चयन किया गया है। इस प्रकार आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री की भाषा लालित्य प्रधान है। उनके शब्द मानो सौन्दर्य की सहज सृष्टि करते हैं। उनके भाव और शब्दों को ललित सम्मिलन वर्ण्य–विषय को इस प्रवणता प्रदान करता है। **'काकली'** नामक गीतिसंग्रह से एक उदाहरण प्रस्तुत है–*

ध्वान्तं हर मे हृदि संक्रान्तम्।

त्वां विहाय विदधाति समरसं

को जीवनमुद्भ्रान्तम्।।

तरलतरङ्गां त्रिपथगङ्गां।

वहसि तूत्तमाङ्गेन

क्षालय कायालयकल्मषमयि

कुरु मे स्वान्तं शान्तम्।[7]

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

प्रस्तुत गीत में भगवान् शिव की महिमा का वर्णन करते हुए कल्याण के निमित्त उनसे प्रार्थना की गई है कि हे भगवान् शिव ! मेरे हृदय के अन्धकार को आप दूर करें। आप के अतिरिक्त भला ऐसा संक्रान्त कौन है जो अद्भ्रान्त जीवन को समरस करता है ? तरल–तरङ्गों वाली त्रिपथगामिनी गंगा को आप अपने सिर पर धारण करते हो। हे प्रभु ! पाप से पूर्ण मेरे अन्तःकरण को आप इस गंगाजल से धोकर मुझे शान्ति प्रदान करें।

*इस प्रकार प्रस्तुत गीत में भगवान शिव के लिए **'संक्रान्तम्', 'उद्भ्रान्तम्'** इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया गया है और गंगा के लिए **'त्रिपथगङ्गां'** जैसे विशेषण का प्रयोग किया गया है, जिससे भाषा को नवीनता प्राप्त हुई है।*

*संगीतात्मकता गीत का मुख्य गुण है। गीत के मूल में संगीत निहित है। इस प्रकार की संगीतात्मक ध्वनि से पूरित अनेक अर्वाचीन संस्कृत गीतकारों द्वारा रचे गए गीत हैं, उनमें से आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री प्रणीत **'काकली'** में **'भारतीवासन्तगीतिः'** नामक गीत इस दृष्टि से महत्वपूर्ण गीत हैं जिनका एक उदाहरण प्रस्तुत है–*

निनादय नवीनामये वाणि ! वीणाम्।

मृदुं गाय गीतिं ललित–नीति–लीनाम् ।।

मधुरमञ्जरीपिञ्जरीभूतमालाः,

वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः;

कलापाः सकलकोकिलाकाकलीनाम्।

***निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्।।*[93]**

प्रस्तुत गीत में माधुर्य गुण युक्त वर्णों का प्रयोग हुआ है तथा सहज एवं सरस पदावली का प्रयोग हुआ है।

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री प्रणीत 'काकली' गीत संकलन में भी सूक्तियों का प्रयोग इस प्रकार है–

***ज्वलयसि रामनाम, पार्श्वे च करोष्यसि सङ्गम्।*[94]**

मुख में रामनाम भजते हो और साथ में धूर्तता करते हो।

***कलधौते सौरभ्यं स्यात्।*[95]**

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

सोने में सुगन्ध होना।

*आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री जी की भाषा सर्वथा भाव–प्रसङ्गानुवर्तनी है। वे यथायोग्य भावों को तथा प्रसंगों के अनुरूप अपनी भाषा को परिवर्तित कर लेते हैं। वे सहज ही सुन्दर एवं ललित रूप में अभिव्यक्त करने की चित्ताह्लादक सामर्थ्य रखते हैं। जहाँ श्रृङ्गार के प्रसंग में कोमल कमनीय वर्णों से रमणीयता का सृजन करते हैं, वहीं वीर और रौद्र रस के वर्णन में कठोर वर्णों के प्रयोग से चित्त को तोष प्रदान करते हैं। **'काकली'** गीतरचना के **'प्रभात सौन्दर्यम्'** नामक गीत में गीतकार द्वारा भाव–प्रसङ्गानुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है, जो प्रस्तुत पंक्तियों में इस प्रकार उल्लिखित है–*

विकसति कमलं विलसति सलिलं

पवनो वहति सलीलम्।

दिशि दिशि धावति कूजति नृत्यति

खगकुलमतिशयलोलम्।।[67]

यह गीत प्रभातकालीन सूर्य के प्रभाव से प्रभासित वातावरण का निरूपण करता है। कवि ने इसमें सूर्य के उदय की क्रमिक रेखा खींची है। सूर्य उदित हो रहा है। अन्धकार फटा जा रहा है। ओह ! यह संसार कितना सुन्दर लग रहा है। चारों चतुर्भ्रमरों का समूह विचरण कर रहा है। अविराम गुंजन मन को मोह रहा है। कमल विकसित हो रहे हैं। जल शोभित हो रहा है और वायु लीलापूर्वक वह रही है। पक्षियों का समूह अत्यधिक चंचलता के साथ दिशा–दिशा में दौड़ रहा है, कूज रहा है, नृत्य कर रहा है। इस प्रकार प्रभातकालीन वर्णन भी गीतकार के भावों के साथ–साथ भाषा भी साम्य रखती है।

***'काकली'** में श्रृंगाररस का प्रयोग प्रधान रूप से किया गया है। जिसका एक उदाहरण इस प्रकार है–*

कादम्बिनी त्वमसि किम्?

दयिताया मे नाम वर्त्तते तेऽपि ततो नु हससि किम्?

कादम्बिनी त्वर्मास किम्?

चन्दां मन्दीकृतस्त्वया, मद्वल्लभया मुखचन्द्रः,

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

तारास्त्वयि संलग्ना, भग्ना तस्यान्तदलि 'तारा'।[21]

प्रस्तुत रस का स्थायी भाव रति है। इस गीत में कादम्बिनी अर्थात् मेघमाला की तुलना कवि ने किसी कादम्बिनी नाम्नी प्रयेसी से की है। उन्होंने मेघमाला की चमक–दमक देखकर पूछा है कि कया तुम कादम्बिनी हो? हाँ! वो तुम हो ही लेकिन मेरी प्रिया का नाम भी वही है। क्या, यही सोचकर तुम हँस रही हो? तुमने तो चन्द्रमा का मुख मलिन कर दिया है। किन्तु मेरी प्रिया के द्वारा तो अच्छे–अच्छे का मुखचन्द्र मलिन कर दिया जाता है। ये जो तारे तुममें संलग्न हैं, इनका अभिमान मत करो। मेरी प्रेयसी की सखी का नाम भी तारा है। प्रस्तुत गीत में ***'मेघमाला'*** *उद्दीपन तथा कादम्बिनी आलम्बन विभाव है।* ***'मेघमाला की चमक–दमक'*** *तथा उसका हँसना अनुभाव हैं। प्रिया की तुलना मेघमाला से करने पर जो* ***'रोमांच'*** *उत्पन्न हो रहा है वह सात्विक भाव है। प्रेयसी की प्रशंसा में 'हर्ष' की अनुभूति व्यभिचारी भाव है। इस प्रकार अपनी प्रेयसी के कल्पित वर्णन में गीतकार ने श्रृंगार रस का प्रयोग किया है।*

'काकली' *में आनुप्रासिकता का अनेक स्थानों पर प्रयोग हुआ है। उनकी* ***'वाणीवन्दनम्'*** *नामक गीति में देवी सरस्वती को जगन्नाटिका के रूप में चित्रित करती हुई कवि यह पंक्ति विलक्षण आनुप्रासिक सौंदर्य उत्पन्न करती है, यथा–*

कलक्वणनकच्छपीरणनदत्तकर्णादरा–

ईरोन्नतमुखी कलाकलितगीतिकागायने।

विभाकरविभानिभाकृतिमणिस्फुरच्छाटिका

प्रभाभिनववाटिका जयति सा जगन्नाटिका।।[78]

प्रस्तुत उदाहरण में ***कल, क्वण, कच्छ, कर्णा, कला, कलित, विभाकर, विभा, निभा, प्रभा, वाटिका, छाटिका तथा नाटिका*** *इत्यादि शब्दों में क, व, छ तथा न वर्णोंकी बारम्बार आवृत्ति होने से आनुप्रासिकता का बोध होता है। गीत संग्रह में एक उदाहरण इस प्रकार निरूपित है–*

निन्दति नन्दननन्दनहरिचन्दनसुमपीतरागम्।

विन्दति मन्दं मन्दममन्दमिलिन्देन्दीवररागम्।।

× × ×

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

कमलाकरकमलामोदितकमलाकरकमलं कमलाम्–

विनोदयति न, परन्तु नितान्तं स्वान्तं क्लान्तं विकलम्।

× × ×

कोकिलकललाषेङ्गितनृत्यन्मञ्जुमञ्जरीपुञ्जम्,

गुञ्जच्चञ्चुरचञ्चरीकसञ्चयसञ्चारितकुञ्जम्।[61]

प्रस्तुत गीत में ***निन्दति, नन्दन, चन्दन, मन्दं, मन्दम् मिलिन्द, रागम्, कमलाकर, कमला, कमल, कमलम्, नितान्तम्, स्वान्तम्, विकलम्, कोकिल, कलल, मञ्जु, मञ्जरी, पुञ्जम्, गुञ्जन, चञ्चुर, चञ्चरी, सञ्चय, सञ्चारित, कुञ्जम्*** *इत्यादि शब्दों द्वारा गीत का प्रवाह बना हुआ है।*

'काकली' *गीतरचना के* ***'प्रभात सौन्दर्यम्'*** *नामक गीत में गीतकार द्वारा भाव–प्रसङ्गानुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है, जो प्रस्तुत पंक्तियों में इस प्रकार उल्लिखित है–*

विकसति कमलं विलसति सलिलं

पवनो वहति सलीलम्।

दिशि दिशि धावति कूजति नृत्यति

खगकुलमतिशयलोलम्।।[67]

यह गीत प्रभातकालीन सूर्य के प्रभाव से प्रभासित वातावरण का निरूपण करता है। कवि ने इसमें सूर्य के उदय की क्रमिक रेखा खींची है। सूर्य उदित हो रहा है। अन्धकार फटा जा रहा है। ओह ! यह संसार कितना सुन्दर लग रहा है। चारों चतुर्भ्रमरों का समूह विचरण कर रहा है। अविराम गुंजन मन को मोह रहा है। कमल विकसित हो रहे हैं। जल शोभित हो रहा है और वायु लीलापूर्वक वह रही है। पक्षियों का समूह अत्यधिक चंचलता के साथ दिशा–दिशा में दौड़ रहा है, कूज रहा है, नृत्य कर रहा है। इस प्रकार प्रभातकालीन वर्णन भी गीतकार के भावों के साथ–साथ भाषा भी साम्य रखती है।

सन्दर्भ

1. काकली– कादम्बिनी – 7
2. काकली– पृष्ठ सं. 38
3. काकली– पृष्ठ सं. 5
4. काकली– पृष्ठ सं. 76
5. काकली– पृष्ठ सं. 51
6. काकली– पृष्ठ सं. 64
7. वही– पृष्ठ सं. 52
8. वही– पृष्ठ सं. 11
9. वही– पृष्ठ सं. 34
10. वही– पृष्ठ सं. 49
11. वही– पृष्ठ सं. 26
12. वही– पृष्ठ सं. 22
13. वही– पृष्ठ सं. 28
14. वही– पृष्ठ सं. 30
15. वही– पृष्ठ सं. 69

REFERENCES

1. Kakli- Kadambini-7
2. Kalki, pg 38
3. Kakli, pg 5
4. Kakli, pg 76
5. Kakli, pg 51
6. Kakli, pg 64
7. Same, pg 52
8. Same, pg 11
9. Same, pg 34
10. Same, pg 49
11. Same, pg 26
12. Same, pg 22
13. Same, pg 28
14. Same, pg 30
15. Same, pg 69